02 / 05 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विशेष जीवन कहानी अर्थात सदा चढ़ती कला की अनुभूति

➢➢ मैं आत्मा संगम युग पर हूं

➳ _ ➳ यह जीवन विशेष है

➳ _ ➳ यह अलौकिक जीवन परमातम देन है

➳ _ ➳ इस विशेष जीवन में मैं सदा बाप की साथी हूं

→ साथ से सदा समीपता का अनुभव कर रही हूं

- मेरा जीवन सहज योगी बन गया है
- सदा चढ़ती कला का अनुभूति हो रही है
- यह चढ़ती कला ही
- बहुत काल के राज्य भाग्य का आधार है

➢➢ सर्व शक्तियों की अनुभूति

➳ _ ➳ मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूं

➳ _ ➳ सर्वशक्तिवान शिव पिता की संतान हूं

➳ _ ➳ परमात्मा का बच्चा हूं

➳ _ ➳ पूर्ण वर्से की अधिकारी हूं

→ प्रेम के सागर शिव बाबा ने

- मुझे मास्टर प्रेम स्वरूप बनाया है
- ज्ञानी तू आत्मा का वरदान दिया है

→ ऐवर पयोर शिव बाबा ने मुझ आत्मा को

- मास्टर पवित्रता का सागर बना दिया है

→ शांति के सागर की किरणे मुझ पर बरस रही है

- उन किरणों में समाती मै मास्टर शांति का सागर हूं
- आनंद रस में समाई
- मैं मास्टर आनंद स्वरूप आत्मा हूं
- सर्व शक्तियों की सतरंगी किरणों की धारा को
- स्वयं में समाता देख रही हूँ
- स्थूल देह को देखती हूं
- चारों और सतरंगी प्रकाश फैल रहा है

➢➢ बाबा के साथ से विघ्न विनाशक स्थिति का अनुभव

➳ _ ➳ बाबा के साथ साक्षी स्थिति में

➳ _ ➳ जीवन की हर परिस्थिति को देखती हूं

→ हर परीक्षा एक खेल अनुभव हो रही है

→ बीती बातों को फुल स्टॉप करती

- मैं आत्मा समर्थ स्वरूप हूं
- हर परिस्थिति स्वतः ही समाप्त हो गई है
- और स्व स्थिति श्रेष्ठ हो गई है

→ हजार भुजाओं वाला साथी साथ है

- इस संकल्प से मैं निर्विघ्नं आत्मा बन गई हूं

➳ _ ➳ मेरा यह जीवन विशेष कार्य के निमित्त है

→ मेरा हर कर्म अन्य आत्माओं को प्रेरणा देने वाला है

- इस प्रेरणा योग्य जीवन के अनुभव में
- अपनी संपूर्ण विशेषताओं को स्मृति में लाती मै आनंदित होती हूं